THE HERALD of Christian Science
informal translations from the publications of the Christian Science Publishing Society

परभक्षी तथा परभक्षण के विषय में क्या किया जा सकता है
Predators and what can be done about predation

Author – Name with held

The Christian Science Monitor/Monitor World 17- 23, March, 2003

परभक्षियों के बारे में इंसानी परिवार की सोच के तरीके को बदलने की आवश्यकता है। परभक्षी विकसित तथा प्रभावित किए जाते हैं, पैदा नहीं होते।

माली परभक्षण का प्रतिरोध करना जानते हैं। तेजी से फैलने वाली जँगली बूटियाँ बहूमूल्य जगह, पौष्टिक तत्वों तथा सूर्य के प्रकाश को छीन लेती हैं। वे नवजात पंक्तिबद्ध पौधों के विकास को रोक देती हैं और माली का समय चुरा लेती हैं जिसे बेहतर तरीके से बिताया जा सकता था।

समझदार मालिन जानती है कि जँगली बूटियाँ, जड़ों इत्यादि को निकालने के लिए समय देना कितना महत्वपूर्ण होता है चाहे वह ओहेयो के किसी फूलों के बाग में डैन्डेलियन के साथ संघर्ष कर रही हो या नाइज़ीरिया के एक मकई के भूखंड में मायावी जँगली बूटी के साथ। वह तेजी से फैलने वाले परभक्षियों को अंकुरित होने या फलने फूलने से भी रोकती है।

बड़े पैमाने पर इंसानी परभक्षण के बारे में क्या कहा जा सकता है? केवल कुछ सामयिक उदाहरणों पर ध्यान दो : अल कायदा तथा इससे संबधित गुटों के द्वारा विश्वव्यापी उग्रवाद को व्यवहार में लाया जाना; पुरोहित वर्ग द्वारा बच्चों तथा औरतों का उत्पीड़न; विश्व के वर्षा प्रचूर वनों में काटो – और – जलाओ कृषि; कुछ विशिष्ट संस्थानों तथा संस्थान अधिकारियों का विनाशकारी लोभ।

चाहे यह उदाहरण कितने भी भिन्न क्यों न हों, वह समान जड़ों के भागीदार हैं। परभक्षियों के उद्देश्य विभिन्न होते हैं, परन्तु परभक्षण की प्रत्येक क्रिया के नीचे जीवन तथा मानसिकता के भौतिक होने की धारणा होती है और इसलिए यह विकृति तथा विनाश के अधीन होती है। यदि हम जीवित रहने तथा प्रभुत्व के मुकाबले में जीवों से कुछ ही बड़े हैं फिर परभक्षण सामान्य है। और अधिकतर जीव वैज्ञानिक तथा समाजिक वैज्ञानिक तथा बहुत से धर्मशास्त्री कहते हैं कि इंसानी विद्यमानता एक जैविक तथा सामाजिक रसायन विज्ञान में बंधी हुई है जो कि स्वार्थी उद्देश्यों तथा क्रियाओं में प्रतिबिम्बित होती है।

इंसानी परिवार की सेहत तथा शाँति के लिए ही सही, परभक्षण का अन्त में उन्मूलन करना होगा। उपचार की क्रिया प्रगति करेगी जैसे ही लोग जीवन के – आध्यात्मिक होने, दिव्य रचयिता का स्वरूप होने के एक विभिन्न सुधारवादी पहलू को अपना लेते हैं। उपचार संभव है क्योंकि भय, अज्ञानता तथा नैतिक कमज़ोरियाँ, जो लोगों को एक दूसरे का शिकार बनाती हैं, भटके हुए विचारों तथा मत प्रणालियों की उपज हैं। और विचार सदा बदलने वाले तथा सुधरने वाले होते हैं।

For this translation in English and other translations in [Hindi], please see http://translations.christianscience.com

Translation © 2014 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

मॉनीटर की संस्थापिका मेरी बेकर एडी ने एक बार पूछा : "क्या हम आवेश, दुर्भावना, ईर्ष्या तथा विवाद की जहरीली जँगली बूटियों को जड़ से उखाड़ कर सोच के बगीचों की सफाई कर रहे हैं? क्या हम स्वार्थ के शीत सख्त पत्थरों को उठा कर फैंक रहे हैं, पाप के रहस्यों का पर्दाफाश कर रहे हैं और प्रेम* के छुपे हुए रत्नों को फिर से चमका रहे हैं, ताकि उन की शुद्ध सम्पूर्णता प्रकट हो सके? क्या हम प्रज्जवलित विश्वास की नूतन ताज़गी तथा धूप को महसूस कर रहे हैं?

नश्वर मन की जँगली बूटियाँ पहली बार उखाड़ने से हमेशा नष्ट नहीं होती; वे पुनः प्रकट हो जाती हैं, विनाशक मायावी घास की तरह, आने वाली दूब के विकास को रोकने के लिए। ओ मूर्ख माली! उन के पुनः प्रकट होने पर नज़र रख तथा उन्हें उन की जन्मजात तृणभूमि से दूर रख, जब तक कि प्रजनन के लिए कोई भी बीजांकुर बाकी न रहे – और सड़ने के लिए ("Miscellaneous Wrtiing 1883-1996" पृष्ठ 343).

कड़े शब्द हैं, परन्तु आक्रमणशील विचारों तथा उद्देश्यों को जड़ से उखाड़ फैंकने के लिए मज़बूत, दृढ़ मानसिक प्रयास तथा विश्वास के परिक्षणों की आवश्यकता होती है। निश्चय ही परभक्षण तथा इसके प्रभावों का उपचार उन "महान कार्यों" में से एक हो सकता है जिनका जीसस ने वादा किया था कि इसे विश्वास करने वाले करेंगे।

विकासवादी जीव विज्ञान और समाज विज्ञान के सिद्धातों द्वारा परिभाषित किए जाने के अलावा जीवन का एक और मॉडल भी है।

जीसस ने उन लोगों का उपचार किया जो उन बीमारियों से पीड़ित थे जिन्हे आज आनुंवशिक रूप से संचारित अवस्थाएं समझा जाता है, जिनमें मिरगी का प्रचंड मामला और एक अन्य गंभीर मानसिक रोग का था। उनके कार्य अत्याधिक प्रोत्साहन देने वाले हैं चमत्कारों की तरह नहीं बल्कि चिह्नकों की तरह, उन कानूनों की ओर इशारा करते हुए जो हमारे अस्तित्व को बनाए रखते हैं।

विकासवादी जीव विज्ञान और समाज विज्ञान के सिद्धातों द्वारा परिभाषित किए जाने के अलावा जीवन का एक और मॉडल भी है। यह मॉडल क्राइस्ट है। क्राइस्ट उस विशिष्ट मानव जीसस की प्रिय उपाधि है। लेकिन क्राइस्ट ख्रीस्तीयता कहलाए जाने वाले धर्म के साथ जुड़े नाम से कहीं अधिक है। यह आध्यात्मिक अस्तित्वों की तरह हम में से प्रत्येक का सार है। क्राइस्ट, साँयस में परमेश्वर की कला की तरह हम में से प्रत्येक के अनूठे व्यक्तित्व का रहस्योद्घाटन करता है – अस्तित्व के आध्यात्मिक कानूनों के अनुसार रचित। जब क्राइस्ट हमारे दिलों को झकझोर देता है, परभक्षी विचारों को जड़ से उखाड़ फैंका जाता है और साथ ही उन्हें आवास नहीं दिया जाता।

हमारे निजी इतिहासों की परवाह न करते हुए मासूमियत हमारी आध्यात्मिक पहचान का सार – भाग होती है। यह हम सब के लिए उतना ही स्वाभाविक है जितनी की बुद्धिमता तथा दयालुता। स्वतः सुधार तथा आत्मसुधार का हर कदम दिव्य सिद्धांत द्वारा प्रेरित होता है, जिसने हमें मूल रूप से मासूम बनाया है। और इन सफलताओं का दैनिक जोड़ शिकार या परभक्षी बनाए जाने से, मानवता की पूर्ण स्वतन्त्रता की ओर एक सामूहिक कदम बन जाता है।

* जो शब्द बड़े आकार में लिखे गए हैं वह परमेश्वर के समानार्थक शब्द हैं।

Translation © 2014 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.